एक आदमी के पास एक गधा था। गधा अपने मालिक का भारी बोझ ढोते-ढोते बूढ़ा हो गया। अब वह भारी सामान नहीं ढो सकता था, इसलिए मालिक के लिए बोझ बन गया था। गधा भी अपने मालिक से परेशान हो गया। एक दिन गधा अपने मालिक को छोड़कर घर से निकल गया और शहर की ओर जानेवाली सड़क पर चल पड़ा। उसने सोचा कि शहर जाकर संगीतज्ञ बन जाऊँगा।

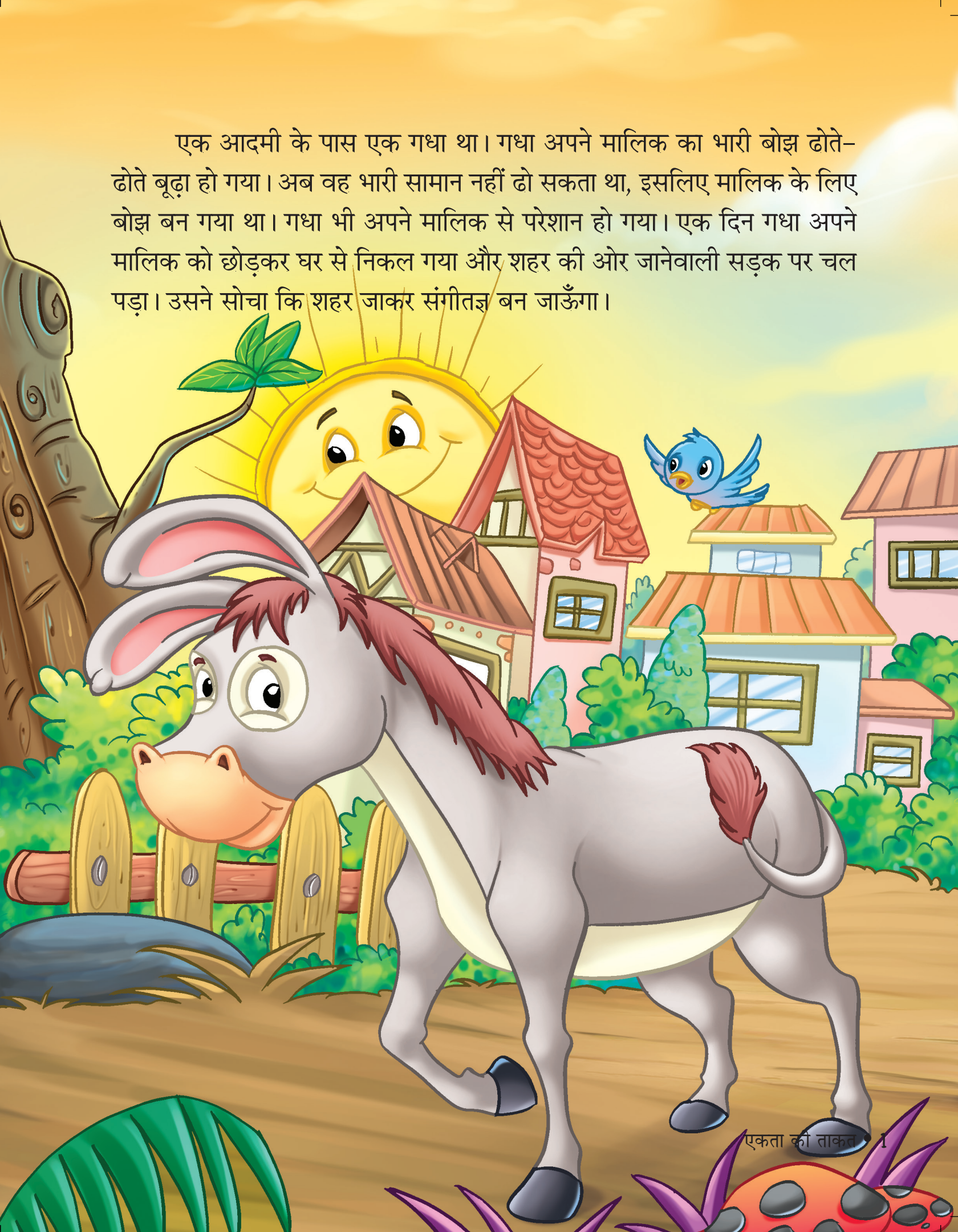

अभी वह थोड़ी दूर ही चला था कि उसे एक कुत्ता मिला। वह थका हुआ था। गधे ने पूछा, ''तुम यहाँ क्यों पड़े हो?'' कुत्ते ने जवाब दिया, ''मैं जैसे-जैसे बूढ़ा हो रहा हूँ, कमजोर होता जा रहा हूँ। मेरे मालिक को अब मेरी कोई जरूरत नहीं है। वह मुझे मार डालना चाहता है, इसलिए मैंने उसका घर छोड़ दिया।'' गधे ने कहा, ''ओह! तुम मेरे साथ क्यों नहीं चलते? मैं संगीतज्ञ बनने के लिए शहर जा रहा हूँ।'' कुत्ते को उसका विचार पसंद आया और वह गधे के साथ शहर के लिए चल पड़ा।

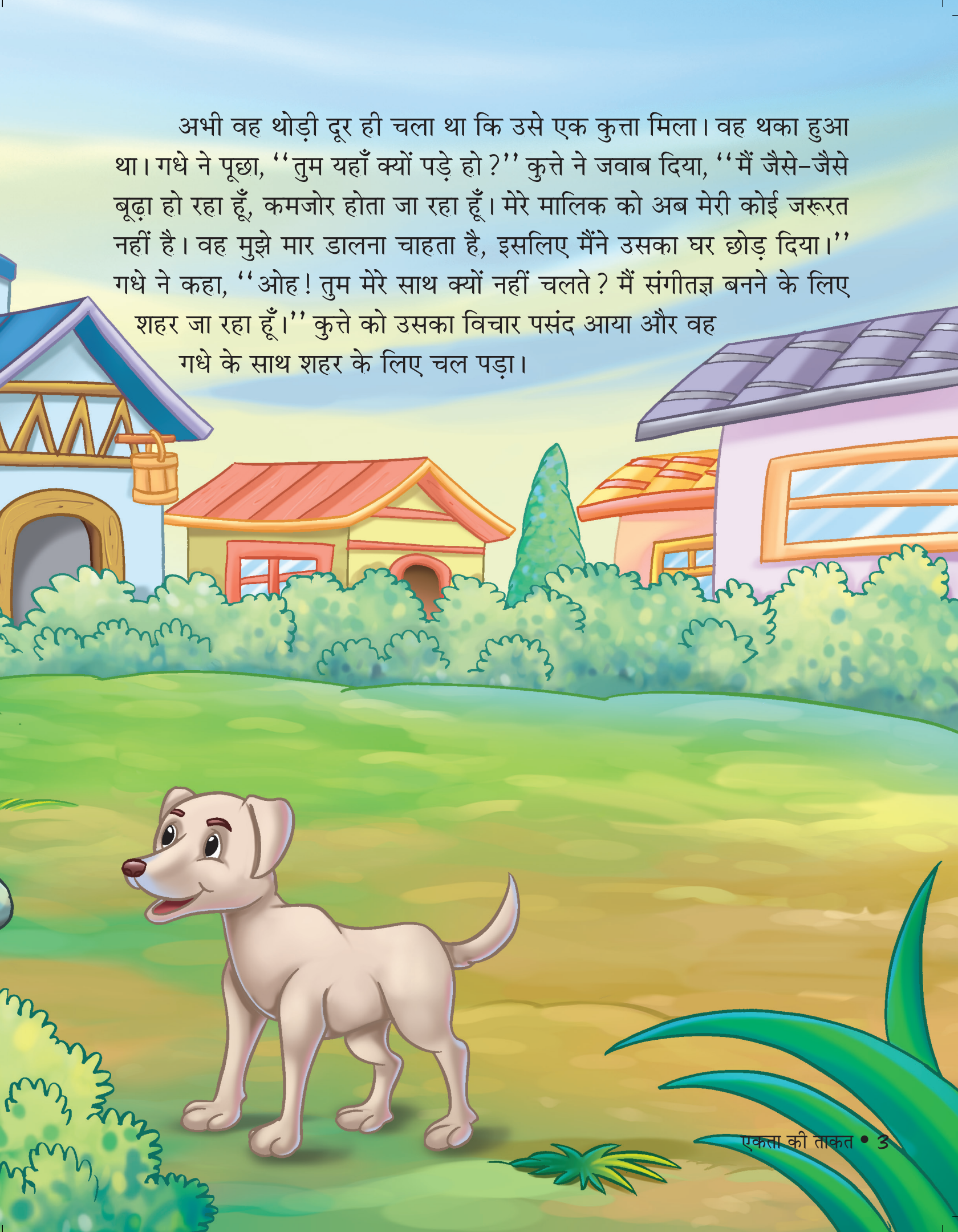

दोनों थोड़ा आगे बढ़े तो उनकी भेंट एक बिल्ली से हुई। बिल्ली उदास थी, क्योंकि उसकी मालकिन उसे डुबो देना चाहती थी। उसकी मालकिन एक बूढ़ी महिला थी, जो हमेशा अँगीठी के पास बैठकर तकली चलाती और वह चाहती कि बिल्ली भी हमेशा उसी के पास बैठी रहे। इसलिए बिल्ली अपनी मालकिन के घर से भाग आई। गधे और कुत्ते ने बिल्ली को अपने साथ शहर चलने के लिए कहा। बिल्ली तैयार हो गई और उनके साथ चल पड़ी। जब वे आगे बढ़े तो उन्हें एक घर में मुरगा मिला। जो दरवाजे पर बैठा हुआ था वह अपनी पूरी ताकत के साथ बाँग दे रहा था। गधे ने मुरगे से पूछा, ''तुम उदास क्यों हो?'' मुरगे ने जवाब दिया,

''मैं अच्छे मौसम की भविष्यवाणी कर रहा हूँ, क्योंकि आज ही के दिन मेरी मालकिन बच्चे की छोटी कमीजें धोती है और वह उन कमीजों को सुखाना चाहती है, लेकिन घर में मेहमान आ रहे हैं और रात्रि भोजन के लिए वह मुझे पकाना चाहती है।'' गधे, कुत्ते और बिल्ली ने कहा, ''तुम हमारे साथ चलो। हम संगीतज्ञ बनने के लिए शहर जा रहे हैं।'' मुरगा उनकी बात सुनकर राजी हो गया। अब वे चारों आगे चल पड़े।

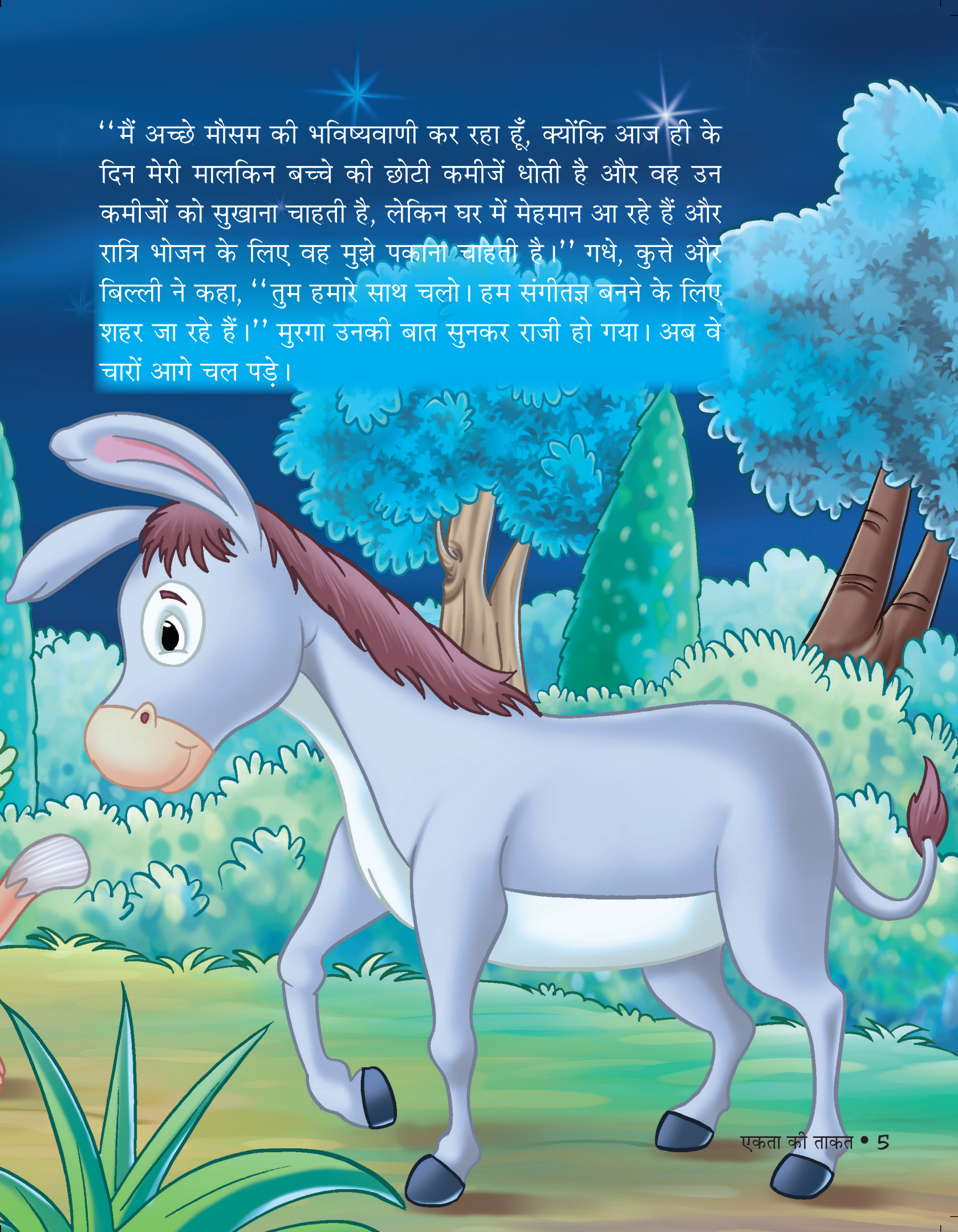

चलते-चलते रात हो गई। सबने रात जंगल में बिताने की सोची। कुत्ता और गधा एक बड़े पेड़ के नीचे लेट गए। बिल्ली और मुरगा पेड़ की डालिओं पर बैठ गए। मुरगा उड़कर पेड़ की सबसे ऊँची डाली पर जा बैठा। अचानक मुरगे को दूर आग की जलती दिखाई पड़ी। उसने अपने साथियों को बुलाया और उन्हें वह रोशनी दिखाई। फिर उन सबने वहाँ जाने की सोची कि शायद वहाँ उन्हें कुछ खाने के लिए और रहने की जगह मिल जाए।

वे चारों रोशनी की ओर चलते–चलते एक घर के पास पहुँचे, जिसमें डाकुओं ने रोशनी कर रखी थी। सबसे बड़ा होने के कारण गधा खिड़की के पास गया और अंदर झाँका। मुरगे ने पूछा, ''तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है?'' गधे ने जवाब दिया, ''अच्छे खाने और पेय से सजा एक टेबल, जिसपर बैठकर डाकू खाने का मजा ले रहे हैं।'' मुरगे ने कुछ देर सोचा और कहा, ''इसी तरह का कुछ हमारे लिए भी होना चाहिए।''

फिर इन जानवरों ने सोचा कि हम किस तरह इन डाकुओं को भगा सकते हैं। बहुत देर सोचने के बाद सबने एक योजना बनाई। गधे ने अपना आधा पैर खिड़की के किनारे रखा। कुत्ता गधे की पीठ पर कूद गया। बिल्ली कुत्ते की पीठ पर चढ़ गई। और अंत में मुरगा उड़कर बिल्ली के सिर पर बैठ गया। अब वे सब एक के ऊपर एक सीधी लाइन में खड़े थे।

फिर गधा ढेंचू-ढेंचू चिल्लाया, उसके बाद कुत्ता भौंका, फिर बिल्ली म्याऊँ-म्याऊँ करने लगी और अंत में मुरगे ने बाँग दी। डाकुओं ने जब इनकी आवाजें सुनीं तो वे डर गए और सोचा कि यहाँ भूत आ गए हैं। उन्होंने खिड़की से बाहर देखा, लेकिन बाहर अँधेरा था, इसलिए उन्हें कुछ दिखाई नहीं दिया। फिर सभी ने जोर-जोर से गाना गाया। डाकू डरकर घर से भाग गए। चूँकि घर खाली था, सभी जानवरों ने टेबल पर बैठकर खाना खाया। उसके बाद वहीं आराम करने का फैसला किया। इस तरह उन्हें अपने लिए अच्छी आरामदेह जगह मिल गई। वे आराम करने के लिए वहीं लेट गए।

जब आधी रात गुजर गई तो डाकू उस घर में वापस आए। जैसे ही वे रसोई में गए, उन्हें बिल्ली की लाल आँखें दिखाई पड़ीं। वे पिछले दरवाजे की तरफ भाग गए। वहाँ कुत्ता सो रहा था, वह उछल पड़ा और उसने डाकू के पैर में काट लिया। फिर वे आँगन में भागे, जहाँ गधे ने उन्हें दुलत्ती एक मारी। अंत में मुरगा ऊपर से चिल्लाया—कुकड़ू कूँ। डाकुओं ने सोचा कि भूत अभी भी इसी घर में हैं, इसलिए अपनी जान बचाने के लिए वे वहाँ से भाग निकले।

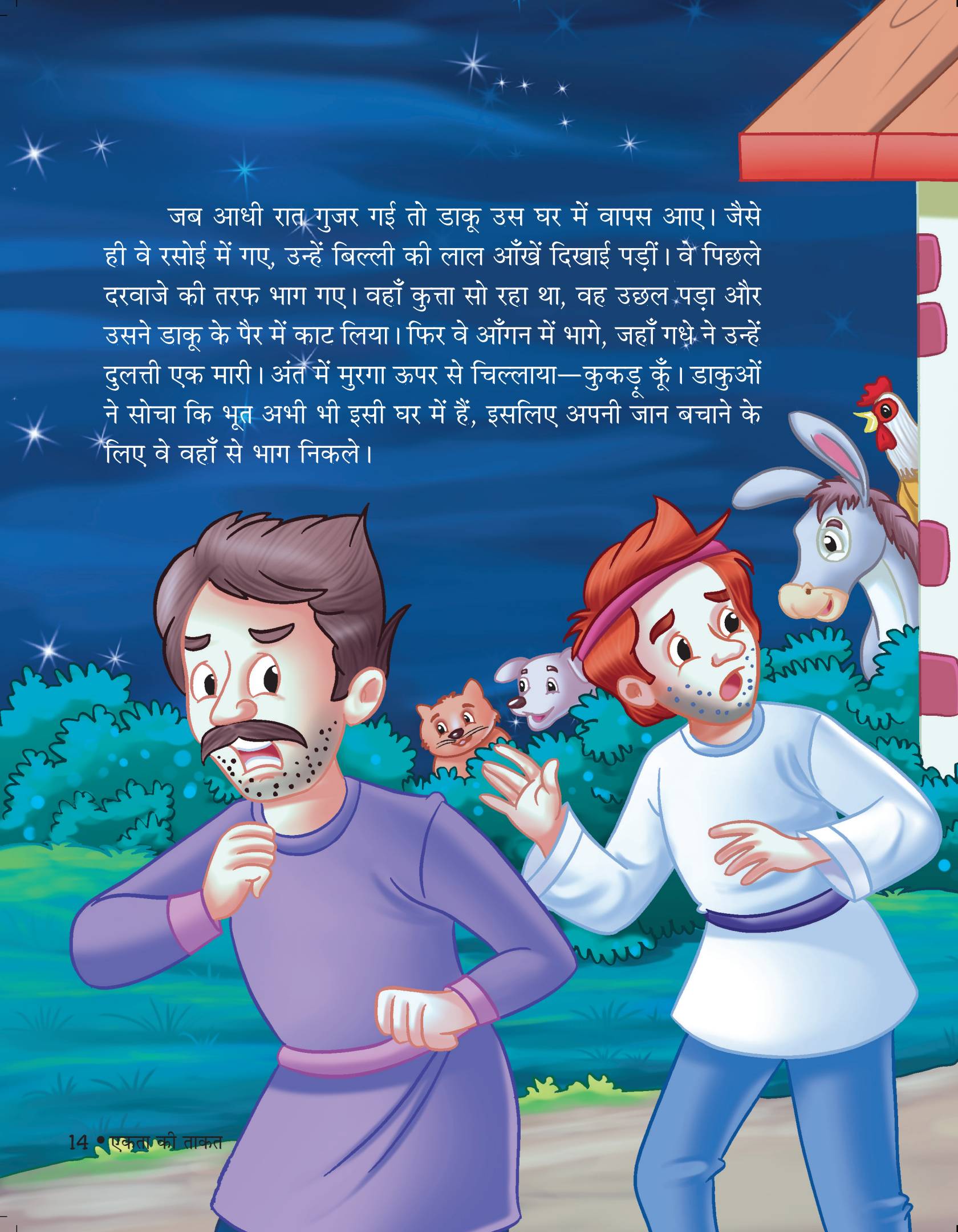

जैसे ही डाकू घर से बाहर निकले, जानवर घर के अंदर घुस गए। वे टेबल पर बैठ गए। उन्होंने बचे हुए खाने को मजे से खाया, क्योंकि उन्हें दुबारा भूख लगी थी। इसके बाद डाकू कभी उस घर में नहीं लौटे। वे चार साथी, जो शहर में संगीतज्ञ बनने निकले थे, इसी घर में मिल-जुलकर खुशी के साथ रहने लगे।